ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि। तदो मोहणीयस्स पलिदोमवट्ठिदिगो बन्धो जादो। सेसाणं कम्माणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगो ट्ठिदिबन्धो[1]। एदम्हि ट्ठिदिबन्धे पुण्णे मोहणीयस्स जो अण्णो ट्ठिदिबन्धो सो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिओ। तदो सव्वेसिं कम्माणं ट्ठिदिबन्धो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो चेव। ताधे अप्पाबहुअं-णामा-गोदाणं ट्ठिदिबन्धो थोवो। णाणावरण-दंसणावरण-वेदणीय-अंतराइयाणं ट्ठिदिबन्धो संखेज्जगुणो। मोहणीयस्स ट्ठिदिबन्धो संखेज्जगुणो। एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबन्धसहस्साणि गदाणि[2]। तदो जो अण्णो ट्ठिदिबन्धो सो णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिगो जादो। ताधे सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिबन्धो पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगो एत्थ अप्पाबहुअं-णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो। चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबन्धो असंखेज्जगुणो। मोहणीयस्स ट्ठिदिबन्धो संखेज्जगुणो। तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु तिण्हं घादिकम्माणं वेदणीयस्स य पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागिओ ठिदिबंधो जादो। ताधे अप्पाबहुअं-णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो। चदुण्हं कम्माणं ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिबंधसहस्से गदेसु मोहणीयस्स व पलिदोवमस्स

बन्ध संख्यातगुणा और मोहनीयका स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। इस क्रमसे संख्यात स्थितिबन्धसहस्र व्यतीत हो जाते हैं तब मोहनीयका पल्योपममात्र स्थितिवाला बन्ध होता है और शेष कर्मोंका पल्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण स्थितिबन्ध होता हैं। इस स्थितिबन्धके पूर्ण होनेपर मोहनीयका जो अन्य स्थितिबन्ध होता है वह पल्योपमके संख्यातवे भागमात्र होता है। तब सब कर्मोंका स्थितिबन्ध पल्योपमके संख्यातवें भागमात्र ही होता है। उस समयमें अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध स्तोक; ज्ञानावरण दर्शनावरण, वेदनीय व अन्तराय इनका स्थितिबन्ध संख्यातगुणा और मोहनीयका स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। इस क्रमसे संख्यात स्थितिबन्धसहस्र वीत जाते हैं। तब जो अन्य स्थितिबन्ध होता है वह नाम-गोत्र कर्मोंका पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र होता है। उस समयमें शेष कर्मोंका स्थितिबन्ध पल्योपमके संख्यातवें भागप्रमाण होता है। यहां अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा, और मोहनीयका स्थितिबन्ध संख्यातगुणा है। पश्चात् संख्यात स्थितिबन्धसहस्रोंके वीत जानेपर तीन घातिया कर्मोंका और वेदनीयका स्थितिबन्ध पल्योपमके असंख्यातवें भागप्रमाण होता है। उस समय अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा और मोहनीयका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। तत्पश्चात् संख्यात स्थितिबन्धसहस्रोंके वीत जानेपर मोह-

१ संखेज्जदिभागो ट्ठिदिबंधो मु.।

२ कमेण ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि संखेज्जाणि मु.। ३ (च) मु.

असंखेज्जदिभागिओ ठिदिबन्धो जादो। ताधे सव्वेसिं कम्माणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ठिदिबन्धो जादो[1]। ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं सागरोवमसहस्सपुधत्तं अंतोसदसहस्सस्स[2]। जाधे पढमदाए मोहणीयस्स पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिबन्धो जादो ताधे अप्पाबहुअं–णामा-गोदाणं ट्ठिदिबन्धो थोवो। चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबन्धो तुल्लो असंखेज्जगुणो। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि। तदो जम्हि अण्णो ट्ठिदिबंधो तम्हि एक्कसराहेण णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो थोवो। मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो[3]। एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि। तदो जम्हि अण्णो ट्ठिदिबंधो तम्हि एक्कसराहेण मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो[4]। चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिबंधो तुल्लो असंखेज्जगुणो। एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि। तदो जम्हि अण्णो ट्ठिदिबंधो तम्हि एक्कसराहेण मोहणीयस्स ट्ठिदिबंधो थोवो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्ज-

---

नीयका भी पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र स्थितिबन्ध हो जाता है। उस समय सब कर्मोंका पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र स्थितिबन्ध होता है। उस समयमें स्थितिसत्व शतसहस्रके भीतर सहस्रपृथक्त्व सागरोपमप्रमाण रहता है। जब प्रथमतः मोहनीयका पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र स्थितिबन्ध होता है तब अल्पबहुत्वका क्रम इस प्रकार है––नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिबन्ध तुल्य असंख्यातगुणा, और मोहनीयका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा है। इस क्रमसे संख्यात स्थितिबन्धसहस्र वीत जाते हैं। तब जिस समयमें अन्य स्थितिबन्ध होता है उस समयमें एक साथ नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध स्तोक, मोहनीयका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा, और चार कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा होता है। इस क्रमसे संख्यात स्थितिबन्धसहस्र वीत जाते हैं। तब जिस समयमें अन्य स्थितिबन्ध होता है उस समयमें एक साथ मोहनीयका स्थितिबन्ध स्तोक, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा, और चार कर्मोंका स्थितिबन्ध तुल्य असंख्यातगुणा होता है। इस क्रमसे संख्यात स्थितिबन्धसहस्र वीत जाते हैं। तब जिस समयमें अन्य स्थितिबन्ध होता है उस समयमें एक साथ मोहनीयका स्थितिबन्ध स्तोक, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध

---

१ एवं पल्लं जादा वीसीया तीसिया य मोहो य पल्लासंखं च कमं बंधेण य वीसियतियाओ॥ लब्धि. ४२०.

२ उदधिसहस्सपुधत्तं अब्भंतरदो दु सदसहस्सस्स। तक्काले ठिदिसंतो आउगवज्जाण कम्माणं॥ लब्धि. ४२१.

३ मोहगपल्लासंखट्ठिदिबंधसहस्सगेसु तीदेसु। मोहो तीसिय हेट्ठा असंखगुणहीणयं होदि। लब्धि. ४२२.

४ तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वीसियाण हेट्ठादु। एक्कसराहे मोहो असंखगुणहीणयं होदि॥ लब्धि. ४२३.

गुणो । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो[1] । एवं संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो अण्णो ट्ठिदिबंधो एक्कसराहेण मोहणीयस्स थोवो । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो । णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो[2] । वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ[3] । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिबंधसहस्साणि गदाणि । तदो ट्ठिदिसंतकम्मं असण्णिठिदिबंधेण समगं जादं[4] । तदो संखेज्जेसु ठिदिबंधसहस्सेसु गदेसु चउरिंदियट्ठिदिबंधेण समगं जादं । एवं तीइंदिय-बीइंदिट्ठिदिबन्धेण समगं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु एइंदियट्ठिदिबन्धेण समगं ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु णामा-गोदाणं पलिदोवमट्ठिदिगं संतकम्मं जादं । ताधे चदुण्हं कम्माणं दिवड्ढपलिदोवम-ट्ठिदिसंतकम्मं, मोहणीयस्स वेपलिदोवमट्ठिदिसंतकम्मं । एदम्हि ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागिगं ट्ठिदिसंतकम्मं । ताधे अप्पाबहुगं—सव्वत्थोवं

असंख्यातगुणा तीन घातिया कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा, और वेदनीयका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा होता है। इस प्रकार संख्यात स्थितिबन्धसहस्र वीत जाते हैं। तब अन्य स्थितिबन्ध एक साथ मोहनीयका स्तोक, तीन घातिया कर्मोंका स्थिति-बन्ध असंख्यातगुणा, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा, और वेदनीयका स्थितिबन्ध विशेष अधिक होता है। इस क्रमसे संख्यात स्थितिबन्धसहस्र वीत जाते हैं। तब स्थितिसत्व असंज्ञी पंचेन्द्रियके स्थितिबन्धके सदृश होता है। पश्चात् संख्यात स्थितिबन्धसहस्रोंके वीत जानेपर चतुरिन्द्रियके स्थितिबन्धके सदृश स्थितिसत्व होता है। इसी प्रकार त्रीन्द्रिय व द्वीन्द्रियके स्थितिबन्धके सदृश स्थितिसत्व होता है। पुनः संख्यात स्थितिकाण्डकसहस्रोंके वीत जानेपर एकेन्द्रियके स्थितिबन्धके सदृश स्थिति-सत्व होता है। तत्पश्चात् संख्यात स्थितिकाण्डकसहस्रोंके वीतनेपर नाम-गोत्र कर्मोंका सत्व पल्योपममात्र स्थितिवाला होता है। उस समयमें चार कर्मोंका स्थितिसत्व डेढ पल्योपम और मोहनीयका स्थितिसत्व दो पल्योपमप्रमाण होता है इस स्थितिकांडकके उत्कीर्ण होनेपर नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व पल्योपमके संख्यातवें भागमात्र होता है। उस समयमें अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व सबसे

---

१ तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वेदणीयहेट्ठा दु । तीसियघादितियाओ असंखगुणहीणया होंति ॥ लब्धि. ४२४.

२ तेत्तियमेत्ते बंधे समतीदे वीसियाण हेट्ठा दु । तीसियघादितियाओ असंखगुणहीणया होंति ॥ लब्धि. ४२५.

३ तक्काले वेयणियं णामागोदाउ साहियं होदि । इदि मोहतीसवीसियवेयणियाणं कमो बंधे ॥ लब्धि. ४२६.

४ बंधे मोहादिकमे संजादे तेत्तियेहिं बवेहिं । ठिदिसंतमसण्णिसमं मोहादिकमं तहा संते ॥ लब्धि. ४२७.

णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लं संखेज्जगुणं । मोहणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं । एदेण कमेण ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे तदो चदुण्हं कम्माणं पलिदोवमट्ठिदिसंतकम्मं जादं । ताधे मोहणीयस्स तिभागुत्तरपलिदोवमं ट्ठिदिसन्तकम्मं । तदो ट्ठिदिखंडए पुण्णे चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो । ताधे अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवं णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसन्तकम्मं तुल्लं संखेज्जगुणं । मोहणीयस्स[1] ट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमं जादं । तदो ट्ठिदिखंडए पुण्णे सत्तण्हं कम्माणं पलिदोवमस्स संखेज्जदिभागो ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु[2] गदेसु णामा-गोदाणं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । ताधे अप्पाबहुअं—सव्वत्थोवं णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । मोहट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडपुधत्तेण चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो जादो । ताधे अप्पाबहुअं—णामा-गोदाणं

स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिसत्व तुल्य संख्यातगुणा, और मोहनीयका स्थितिसत्व विशेष अधिक है। इस क्रमसे स्थितिकांडकपृथक्त्वके वीतनेपर तब चार कर्मोंका स्थितिसत्व पल्योपममात्र स्थितिवाला होता है। उस समयमें मोहनीयका स्थितिसत्व त्रिभागसे अधिक पल्योपमप्रमाण होता है। पश्चात् स्थितिकाण्डकके पूर्ण होनेपर चार कर्मोंका स्थितिसत्व पल्योपमके संख्यातवें भागमात्र होता है। उस समयमें अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व सबसे स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिसत्व तुल्य संख्यातगुणा, और मोहनीयका स्थितिसत्व संख्यातगुणा होता है। पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे मोहनीयका स्थितिसत्व पल्योपममात्र हो जाता है। तब स्थितिकाण्डकके पूर्ण होनेपर सात कर्मोंका स्थितिसत्व पल्योपमके संख्यातवें भाग हो जाता है। तत्पश्चात् असंख्यात स्थितिकाण्डकसहस्रोंके वीतनेपर नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व पल्योपमके असंख्यातवें भागमात्र हो जाता है। उस समयमें अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व सबसे स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिसत्व तुल्य असंख्यातगुणा, और मोहका स्थितिसत्व संख्यातगुणा होता है। पुन: स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे चार कर्मोंका स्थितिसत्व पल्योपमके असंख्यातवें भाग हो जाता है। उस समयमें अल्पबहुत्व इस प्रकार है—नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिसत्व

---

१ मोह ता. १, २।

२ ट्ठिदिखंडसहस्सेसु ता. २।

ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । मोहट्ठिदिसंतकम्मसंखेज्जगुणं तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहणीयस्स वि पलिदोवमस्स असंखेज्जदिभागो ट्ठिदिसंतकम्मं जादं । ताधे अप्पाबहुगं–णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । मोहट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिखंडसहस्साणि गदाणि । तदो णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । मोहट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे एक्कसराहेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । चदुण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं तुल्लमसंखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । णामा-गोदाणं ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । वेदणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मोहट्ठिदिसंतकम्मं थोवं । तिण्हं घादिकम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणं । वेदणीयट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं ।

एदेण कमेण संखेज्जाणि ट्ठिदिखंडयसहस्साणि गदाणि । तदो असंखेज्जाणं समयपबद्धाणमुदीरणा[1] । तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिसंखंडयसहस्सेसु गदेसु अट्ठण्हं कसायाणं

तुल्य असंख्यातगुणा, और मोहनीयका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा होता है । तत्पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे मोहनीयका भी स्थितिसत्व पल्योपमके असंख्यातवें भाग रह जाता है । उस समयमें अल्पबहुत्व इस प्रकार है––नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व स्तोक, चार कर्मोंका स्थितिसत्व तुल्य असंख्यातगुणा, और मोहनीयका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा होता है । इस क्रमसे संख्यात स्थितिकाण्डकसहस्र चले जाते हैं । तब नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व स्तोक, मोहनीयका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा और चार कर्मोंका स्थितिसत्व तुल्य असंख्यातगुणा होता है । पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वके वीतनेपर एक साथ मोहनीयका स्थितिसत्व स्तोक, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा, और चार कर्मोंका स्थितिसत्व तुल्य असंख्यातगुणा रहता है । पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे मोहनीयका स्थितिसत्व स्तोक, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा, तीन घातिया कर्मोंका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा, और वेदनीयका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा होता हैं । तत्पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे मोहनीयका स्थितिसत्व स्तोक, तीन घातिया कर्मोंका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितसत्व असंख्यातगुणा, और वेदनीयका स्थितिसत्व विशेष अधिक होता हैं ।

इस क्रमसे संख्यात स्थितिकाण्डकसहस्र वीत जाते हैं । पश्चात् असंख्यात समयप्रबद्धोंकी उदीरणा होती है । तत्पश्चात् संख्यात स्थितिकांडकसहस्रोंके वीत जानेपर आठ

---

१ तीदे बंधसहस्से पल्लासंखेज्जयं तु ठिदिबंधे । तत्थ असंखेज्जाणं उदीरणा समयबद्धाण ।। लब्धि. ४२८.

संकामओ । तदो अट्ठ कसाया ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण संकामिज्जंति । अट्ठण्हं कसायाणमपच्छिमे ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे तेसिं संतकम्मं सेसमावलियं पविट्ठं[1] । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण णिद्दाणिद्दा-पयलापयला-थीणगिद्धीणं णिरयगदि-तदाणुपुव्वी-तिरिक्खगदिपाओग्गणामाणं[2] संतकम्मस्स संकामगो जादो । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण अपच्छिमे ट्ठिदिखंडए उक्किण्णे एदेसिं सोलसण्हं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मं सेसमावलियं पविट्ठं[3] । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण मणपज्जवणाणावरणीय-दाणंतराइयाणं च अणुभागो बंधेण देसघादी जादो । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण ओहिणाणावरणीय-ओहिदंसणावरणीय-लाहंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी जादो । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण सुदणाणावरणीय-अचक्खुदंसणावरणीय-भोगंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादी जादो । तदो ठिदिखंडयपुधत्तेण चक्खुदंसणा-

---

कषायोंका संक्रामक अर्थात् क्षपणाका प्रारम्भक होता है। तब आठ कषायें स्थितिकांडक पृथक्त्वसे संक्रमणको प्राप्त करायी जाती हैं। आठ कषायोंके अन्तिम स्थितिकांडक उत्कीर्ण होनेपर उनका शेष सत्व आवलीको प्रविष्ट अर्थात् एक समय कम आवली, मात्र निषेकप्रमाण रहता है। पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे निद्रानिद्रा, प्रचलाप्रचला और स्त्यानगृद्धि, इन तीन दर्शनावरण तथा नरकगति, नरकगत्यानुपूर्वी और तिर्यंचगतिके योग्य नामकर्म अर्थात् तिर्यग्गति, तिर्यग्गत्यानुपूर्वी, एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय जाति, आताप, उद्योत, स्थावर सूक्ष्म और साधारण, इन तेरह नामकर्मोंके सत्वका संक्रामक होता है। पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे अन्तिम स्थितिकाण्डकके उत्कीर्ण होनेपर इन सोलह कर्मोंका शेष स्थितिसत्व आवलीके भीतर प्रविष्ट होता है। तत्पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे मनःपर्ययज्ञानावरणीय और दानांतरायका अनुभाग बन्धसे देशघाती हो जाता है। पुनः स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे अवधिज्ञानावरणीय-अवधिदर्शनावरणीय और लाभान्तरायका अनुभाग बन्धसे देशघाती हो जाता है। तत्पश्चात् स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे श्रुतज्ञानावरणीय, अचक्षुदर्शनावरणीय और भोगान्तराय, इनका अनुभाग बन्धसे देशघाती हो जाता है। पुनः स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे

---

१ ठिदिबंधसहस्सगदे अट्ठकसायाण होदि संकमगो। ठिदिखंडपुधत्तेण य तट्ठिदिसंतं तु आवलिपविट्ठं ॥ लब्धि. ४२९. अट्ठकसायाणमपच्छिमट्ठिदिखंडये चरिमफालिसरूवेण णिल्लेविदे तेसिमावलियपविट्ठसंतकम्मस्सेव समयणावलियमेत्तणिसेणपमाणस्स परिसेसत्तसिद्धीए णिव्वाहमुवलंभादो । जयध. अ. प. १०७८

२ एत्थ णिरयतिरिक्खगइपाओग्गणामाओ त्ति वुत्ते णिरयगइणिरयगइपाओग्गाणुपुव्वीतिरिक्खगइतिरिक्खगइपाओग्गाणुपुव्वीए इंदियवीइंदियतीइंदियचउरिंदियजादिआदावुज्जोवथावरसुहुमसाहारणणामाणं तेरसण्ह पयडीणं गहणं कायव्वं । जयध अ. प. १०७८-१०७९.

३ ठिदिबंधपुधत्तगदे सोलसपयडीण होदि संकमगो। ठिदिखंडपुधत्तेण य तट्ठिदिसंतं तु आवलिपविट्ठं ॥ लब्धि. ४३०.

वरणीयमणुभागबंधेण देसघादी जादं। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण आभिणिबोहिय-णाणावरणीय-परिभोगंतराइयाणमणुभागो बंधेण देसघादि जादो। तदो ट्ठिदिखंडय-पुधत्तेण वीरियंतराइयस्स अणुभागो बंधेण देसघादी जादो[1]।

तदो ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु गदेसु अण्णं ट्ठिदिखंडयमण्णमणुभागखंडय मण्णं ट्ठिदिबंधं[2] अंतरट्ठिदिउक्कीरणं च समगमाढवेदि। चदुण्हं संजलणाणं णवण्हं णोकसायाणं च अंतरं करेदि। सेसाणं कम्माणं णत्थि अंतरं णिरंतरं। पुरिसवेदस्स[3] कोहसंजलणस य पढम ट्ठिदिमंतोमुहुत्तमेत्तं मोत्तूण अंतरं करेदि, सोदयत्तादो। सेसाणं कम्माणमावलियं मोत्तूण अंतरं करेदि, उदयाभावादो[4]। जाओ अंतरट्ठिदीओ उक्कीरिज्जंति तासि पदेसग्ग-मुक्कीरिज्जमाणियासु[5] ट्ठिदीसु ण दिज्जदि। जासिं पयडीणं पढमट्ठिदी अत्थि, तिस्से पढमट्ठिदीए जाओ संपहिट्ठिदीए उक्कीरिज्जंति तं उक्कीरिज्जमाणं पदेसग्गं संछुहदि।

चक्षुदर्शनावरणीय अनुभागबन्धसे देशघाती हो जाता है। पुनः स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे आभिनिबोधिकज्ञानावरणीय और परिभोगान्तरायका अनुभाग बन्धसे देशघाती हो जाता है। पुनः स्थितिकाण्डकपृथक्त्वसे वीर्यान्तरायका अनुभाग बन्धसे देशघाती हो जाता हैं।

तत्पश्चात् स्थितिकांडकसहस्रोंके बीत जानेपर अन्य स्थितिकांडक, (अन्य अनु-भागकांडक), अन्य स्थितिबन्ध और अन्तरस्थिति-उत्कीरण, इनको एक साथ प्रारम्भ करता है। चार संज्वलन और नव नोकषायोंके अंतरको करता है। शेष कर्मोंका अन्तर नहीं होता। पुरुषवेद और संज्वलनक्रोधकी अन्तमुहूर्तमात्र प्रथमस्थितिको छोडकर अन्तर करता है, वे निरन्तर अर्थात् अन्तर रहित होते हैं। क्योंकि इनका यहां उदय पाया जाता है। शेष कर्मोंकी आवलीमात्र प्रथम-स्थितिको छोडकर अन्तर करता है, क्योंकि यहां शेष प्रकृतियोंके उदयका अभाव है। जिन अन्तरस्थितियोंको उत्कीर्ण किया जाता है उनके प्रदेशाग्रको उत्कीर्ण की जानेवाली स्थितियोंमें नहीं देता है। जिन उदयप्राप्त प्रकृतियोंकी प्रथमस्थिति है उस प्रथम स्थितिमें, जो इस समय स्थितियां उत्कीर्ण की जा रही हैं उस उत्कीर्ण किये जानेवाले प्रदेशको (अपकर्षण करके यथासंभव समस्थितिसंक्रमण द्वारा) देता है। जो प्रकृतियां

---

१ ठिदिबंधपुधत्तगदे मणदाणा तत्तियेवि ओहिदुगं। लाभं च पुणोवि सुदं अचक्खुभोगं पुणो चक्खु ॥ पुणरवि मदिपरिभोगं पुणरवि विरयं कमेण अणुभागो। बंधेण देसघादी पल्लासंखं तु ठिदिबंधो ॥ लब्धि. ४३१-४३२.

२ ट्ठिदिखंडयमण्णं ट्ठिदिबंधं ता. १, २। ३ अंतरं। पुरिसवेदस्स मु.

४ ठिदिखंडसहस्सगदे चदुसंजलणाण णोकसायाणं। एयट्ठिदिखंडुक्कीरणकाले अंतरं कुणइ ॥ संजलणाणं एक्कं वेदाणेक्कं उदेदि तद्दोण्हं। सेसाणं पढमट्ठिदि ठवेदि अंतोमुहुत्तआवलियं ॥ लब्धि. ४३३-४३४.

५ जासिं पयडीणं वेदिज्जमाणाणं पढमट्ठिदी अत्थि तासिं तिस्सेव पढमट्ठिदीए उवरि अप्पणो अण्णेसिं च कम्माणमंतरट्ठिदीसु च उक्कीरिज्जमाणं पदेसग्गमोकड्डणाए जहासंभवं समट्ठिदिसंकमणेण च संछुहदि त्ति सुत्तत्थो। जयध. अ. प. १०८०.

जाओ बज्झंति पयडीओ तासिमावाहमहिच्छिदूण जा जहण्णिया णिसेयट्ठिदि तमादिं कादूण बज्झमाणियासु ट्ठिदीसु उक्कड्डिज्जदि[1]। तदो अणुभागखंडयसहस्सेसु गदेसु अण्णो अणुभागखंडओ जो च अंतरे उक्कीरिज्जमाणे ट्ठिदिबंधो पबद्धो तत्थतणट्ठिदिखंडगो अंतरकरणद्धा च एदाणि समगं णिट्ठियमाणाणि णिट्ठिदाणि।

से काले अंतरकदपढमसमए[2] णवुंसयवेदस्स आउत्तकरणसंकामगो[3] जादो। ताधे चेव मोहणीयस्स संखेज्जवस्सिओ ट्ठिदिबंधो, मोहणीयस्स एगट्ठाणिया बंधोदया, जाणि कम्माणि बज्झंति तेसिं छसु आवलियासु गदासु उदीरणा, मोहणीयस्स आणुपुव्वीसंकमो, लोभसंजलणस्स असंकमो च जादो[4]। तदो संखेज्जेसु ट्ठिदिखंडयसहस्सेसु

बंधती है उनकी आबाधाको लांघकर जो जघन्य निषेकस्थिति है उसे आदि करके (द्वितीयस्थितिमें समवस्थित) बध्यमान स्थितियोंमें उस अन्तरस्थितियोंमें उत्कीर्ण किये जानेवाले प्रदेशाग्रको उत्कर्षण-द्वारा देता है। पश्चात् अनुभागकांडकसहस्रोंके वीत जानेपर अन्य अनुभागकांडक, अन्तरकरणमें स्थितियोंके उत्कीर्ण करते समय जो स्थितिबन्ध बांधा था तत्सम्बंन्धी स्थितिकांडक और अन्तरकरणकाल, ये एक साथ समाप्त किये जानेवाले समाप्त हो जाते हैं।

अन्तरकृत प्रथम समयमें, अर्थात् अन्तरकी अन्तिम फालिके गिरनेपर, आयुक्तकरणसंक्रामक अर्थात् नपुंसकवेदकी क्षपणामें उद्यत होता है (१)। उसी समय ही मोहनीयका संख्यात वर्षवाला स्थितिबंध है (२)। मोहनीयका एक स्थान (लता) वाला बन्ध और उदय (३-४), जो कर्म बंधते है उनकी छह आवलियोंके वीतनेपर उदीरणा (५), मोहनीयका आनुपूर्वीसंक्रमण (६), और लोभके संक्रमणका अभाव (७) हो जाता है। (अर्थात् उस समय जीव इन सात करणोंका प्रारम्भक होता है।) पश्चात् संख्यात स्थितिकांडकसहस्रोंके वीत जानेपर संक्रमणको प्राप्त कराया जानेवाला

---

१ ण केवलं वेदिज्जमाणाणं पढमट्ठिदीए चेव संछुहदि किंतु बज्झमाणचदुसंजलणपुरिसवेदपयडीणं तक्कालियबंधस्स जा आवाहा अंतरायामादो संखेज्जगुणमद्धाणमुवरि चडिदूण ट्ठिदा तमइच्छेयूण बंधपढमणिसेयमादिं कादूण बज्झमाणियासु ट्ठिदीसु विदियट्ठिदीए समवट्ठिदासु तमंतरट्ठिदीसु उक्कीरिज्जमाणपदेसग्गमुक्कड्डणावसेण संछुहदि त्ति भणिदं होदि। जयध. अ. प. १०८०- उक्कीरिदं तु दव्वं संते पढमट्ठिदिम्हि संछुहदि। बंधे वि य आबाधमदित्थिय उक्कट्टदे णियमा ॥ लब्धि. ४३५.

२ जम्हि समए अंतरचरिमफाली णिवदिदा तम्हि समए अंतरं पढमसमयकदं भण्णदे, तदणंतरसमए पुण अंतरं दुसमयकदं णाम भवदि। जयध. अ. प. १०८०.

३ तत्थ णवुंसयवेदस्स आउत्तकरणसंकामगो त्ति भणिदे णवुंसयवेदस्स खवणाए अब्भुट्ठिदो होदूण पयट्टो त्ति भणिदं होदि। जयध. अ. प. १०८०.

४ सत्त करणाणि अंतरकदपढमे ताणि मोहणीयस्स। इगिठाणियबंधुदओ तस्सेव य संखवस्सठिदिबंधो ॥ तस्साणुपुव्विसंकम लोहस्स असंकमं च संढस्स। आवेत्तकरणसंकम छावलितीदेसुदीरणदा ॥ लब्धि. ४३६-४३७.

गदेसु णउंसयवेदो संकामिज्जमाणो संकामिदो पुरिसवेदे[1]। कुदो? आणुपुव्विसंकमत्तादो। एत्थुवउज्जंती गाहा---

संछुहइ पुरिसवेदे इत्थीवेदं णवुंसयं चेव।
सत्तेव णोकसाए णियमा कोहम्मि संछुहइ[2] ।। २४ ।।

संकामिज्जमाणदव्वमाहप्पपरूवणा गाहा---

बंधेण होदि उदओ अहिओ उदएण संकमो अहिओ।
गुणसेडि असंखेज्जा पदेसअग्गेण बोद्धव्वा[3] ।। २५ ।।

णवुंसयवेदं संकामेंतो पढमसमए थोवं पदेसग्गं संकामेदि। विदियसमए असंखेज्जगुणं। एवं जाव संकामगचरिमसमओ त्ति। णवुंसयवेदोदएण चडिदस्स समए समए असंखेज्जगुणाए सेडीए पदेसग्गस्स णिज्जरा होदि। वुत्तं च---

---

नपुंसकवेद पुरुषवेदमें संक्रमणको प्राप्त हो जाता है, क्योंकि यहां आनुपूर्वीसंक्रमण है। यहां उपयुक्त गाथा---

स्त्रीवेद और नपुंसकवेदको पुरुषवेदमें, तथा पुरुषवेद व हास्यादि छह, इन सात नोकषायोंको संज्वलनक्रोधमें नियमसे स्थापित करता है ।। २४ ।।

संक्रमणको प्राप्त होनेवाले द्रव्यके माहात्म्यका प्ररूपण करनेवाली गाथा---

बंधसे उदय अधिक है और उदयसे संक्रमण अधिक होता है। इनकी अधिकता प्रदेशाग्रसे असंख्यातगुणित श्रेणीरूप जानना चाहिये। अर्थात् बंधद्रव्यसे उदयद्रव्य असंख्यातगुणा है और उदयद्रव्यसे संक्रमणद्रव्य असंख्यातगुणा है ।। २५ ।।

नपुंसकवेदको संक्रमाता हुआ प्रथम समयमें स्तोक प्रदेशाग्रका संक्रमण कराता है, द्वितीय समयमें असंख्यातगुणे प्रदेशाग्रका संक्रमण कराता है। इस प्रकार यह क्रम संक्रमणके अन्तिम समय तक रहता है। नपुंसकवेदके उदयके साथ श्रेणी चढे हुए जीवके प्रत्येक समयमें असंख्यातगुणित श्रेणीके अनुसार प्रदेशाग्रकी निर्जरा होती है। कहा भी है--

---

१ ठिदिबंधसहस्सगदे संढो संकामिदो हवे पुरिसे। पडिसमयसंखगुणं संकामगचरिमसमओ त्ति ।। लब्धि. ४४०.

२ लब्धि. ४३८; जयध. अ. प. १०९०.

३ लब्धि. ४४१. एत्थ गुणसेढि त्ति वुत्ते गुणगारपंत्ती गहेयव्वा। ××× पदेसग्गेण बंधो थोवो उदयो असंखेज्जगुणो संकमो असंखेज्जगुणो। पदेसग्गेण णिहालिज्जमाणे बंधोदयसंकमाणं समाणकालभावीणं थोवबहुत्तमेवं होदि त्ति वुत्तं होदि। जयध. अ. प. १०९२.

गुणसेडिअसंखेज्जा पदेसअग्गेण संकमो उदओ ।
से काले से भज्जो बंधो पदेसग्गे[1] ॥ २६ ॥

एवं णवुंसयवेदं संकामिय तदो से काले इत्थिवेदस्स पढमसमयसंकामगो जादो । ताधे अण्णो ट्ठिदिखंडओ, अण्णो अणुभागखंडओ, अण्णो ट्ठिदिबंधो च पारद्धो[2] । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण इत्थिवेदक्खवणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं- संखेज्जवस्सट्ठिदिओ बंधो जादो । तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्तेण इत्थिवेदस्स जं ट्ठिदिसंतकम्मं तं सव्वमागाइदं । सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्मस्स असंखेज्जा भागा आगाइदा । तम्हि ट्ठिदिखंडए पुण्णे इत्थिवेदो संछुहमाणो संछुद्धो[3] । ताधे चेव मोहणीयस्स संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि ट्ठिदिसंतकम्मं जादं ।

संक्रमण (गुणसंक्रमण) और उदय उत्तरोत्तर अनन्तर कालमें अपने अपने प्रदेशाग्रकी अपेक्षा असंख्यातगुणित श्रेणीरूप होते हैं । किन्तु प्रदेशाग्रकी अपेक्षा बन्ध भजनीय है, अर्थात् वह योगोंकी हानि, वृद्धि व अवस्थानके अनुसार हानि, वृद्धि या अवस्थानरूप होता है ॥ २६ ॥

इस प्रकार नपुंसकवेदको संक्रमाकर तदनन्तर कालमें स्त्रीवेदका प्रथयसमयवर्ती संक्रामक होता है । उस समयमें अन्य स्थितिकांडक, अन्य अनुभागकांडक और अन्य स्थितिबन्धका प्रारम्भ करता है । पश्चात् स्थितिकांडकपृथक्त्वसे स्त्रीवेदके क्षपणाकालमें संख्यातवें भागके व्यतीत होनेपर ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय, इनका संख्यात वर्षमात्र स्थितिवाला बन्ध होता है । पश्चात् स्थितिकांडकपृथक्त्वसे स्त्रीवेदका जो स्थितिसत्व है वह सब क्षपणामें आकर प्राप्त हो जाता है । शेष कर्मोंके स्थितिसत्वके असंख्यात बहुभाग प्राप्त होते हैं । उस स्थितिकांडकके पूर्ण होनेपर संक्रमणको प्राप्त कराया जानेवाला स्त्रीवेद संक्रमणको प्राप्त हो जाता है । उसी समय ही मोहनीयका स्थितिसत्व संख्यात हजार वर्षप्रमाण हो जाता है ।

---

१ लब्धि. ४४२. गुणसेढिअसंखेज्जा च एवं भणिदे पदेसग्गेण णि॒गलिज्जमाणे संकमो उदओ च णियमा असंखेज्जाए सेढीए पयट्टदि त्ति घेत्तव्वं । जयध. अ. प. १०९४. से काले से काले भणिदे वीप्सानिर्देशोऽयं दृष्टव्य:, अथवा एक्को सेकालणिद्देसो गाहापुव्वद्धणिद्दिट्ठाणमुदयसंकमाणं विसेसणभावेण संबंधणिज्जो, अण्णो पच्छद्धणिद्दिट्ठस्स बंधस्स विसेसणभावेण जोजेयव्वो । भज्जो बधो पदेसग्गे एवं भणिदे पदेसग्गविसओ बंधो चउव्विहवड्ढिहाणिअवट्ठाणेहि भजियव्वो त्ति भणिदं होई, जोगवड्ढिहाणिअवट्ठाणवसेण पदेसबंधस्स तहा भावसिद्धीए वरोहाभावादो । जयध. अ. प. १०९५.

२ इदि संढं संकामिय से काले इत्थिवेदसंकमगो । अण्णं ठिदिरसखंडं अण्णं ठिदिबंधमारभइ ॥ लब्धि. ४४३.

३ थी अद्धासंखेज्जाभागे पगदे तिघादिठिदिबंधो । वस्साणं संखेज्जं थीसंकंतापगदंते ॥ लब्धि. ४४४.

से काले सत्तण्हं णोकसायाणं पढमसमयसंकामओ[1]। सत्तण्हं णोकसायाणं पढमसमयसंकामयस्स ट्ठिदिबंधो मोहणीयस्स थोवो। णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणो। णामा-गोदाणं ट्ठिदिबंधो असंखेज्जगुणो। वेदणीयस्स ट्ठिदिबंधो विसेसाहिओ[2]। ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं मोहणीयस्स थोवं। तिण्हं घादिकम्माणमसंखेज्जगुणं। णामा-गोदाणं ट्ठिदिसंतकम्मं असंखेज्जगुणं। वेदणीयस्स ट्ठिदिसंतकम्मं विसेसाहियं[3]। पढमट्ठिदिखंडए पुण्णे मोहणीयट्ठिदिसंतकम्मं संखेज्जगुणहीणं, सेसाणं कम्माणं ट्ठिदिसंतकम्ममसंखेज्जगुणहीणं[4]। ट्ठिदिबंधो णामा-गोद-वेदणीयाणं असंखेज्जगुणहीणो, घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो[5]। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे सत्तण्हं णोकसायाणं खवणद्धाए संखेज्जदिभागे गदे णामा-गोद-वेदणीयाणं संखेज्जाणि वस्साणि ट्ठिदिबंधो जादो[6]। तदो ट्ठिदिखंडयपुधत्ते गदे सत्तण्हं णोकसायाणं खवणद्धाए

अनन्तर समयमें सात नोकषायोंका प्रथमसमयवर्ती संक्रामक होता है। सात नोकषायोंके प्रथमसमयवर्ती संक्रामकके मोहनीयका स्थितिबन्ध स्तोक; ज्ञानावरण, दर्शनावरण और अन्तराय, इनका स्थितिबन्ध संख्यातगुणा; नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा, और वेदनीयका स्थितिबन्ध विशेष अधिक होता है। उस समयमें मोहनीयका स्थितिसत्व स्तोक, तीन घातिया कर्मोंका संख्यातगुणा, नाम-गोत्र कर्मोंका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा और वेदनीयका स्थितिसत्व विशेष अधिक है। प्रथम स्थितिकांडकके पूर्ण होनेपर मोहनीयका स्थितिसत्व संख्यातगुणा हीन और शेष कर्मोंका स्थितिसत्व असंख्यातगुणा हीन हो जाता है। नाम, गोत्र और वेदनीय, इनका स्थितिबन्ध असंख्यातगुणा हीन तथा घातिया कर्मोंका स्थितिबन्ध संख्यातगुणा हीन होता है। पश्चात् स्थितिकांडकपृथक्त्वके वीतनेपर सात नोकषायोंके क्षपणकालमेंसे संख्यातवें भागके चले जानेपर नाम, गोत्र व वेदनीय, इनका संख्यात वर्षमात्र स्थितिबन्ध होता है। पश्चात् स्थितिकांडकपृथक्त्वके वीतनेपर सात नोकषायोंके क्षपण

---

१ ताहे संखसहस्सं वस्साणं मोहणीयठिदिसंतं। से काले संकमगो सतण्हं णोकसायाणं ।। लब्धि. ४४५.

२ ताहे मोहो थोवो संखेज्जगुणं तिघादिठिदिबंधो। तत्तो असंखगुणियो णामदुगं साहियं तु वेयणियं ।। लब्धि. ४४६.

३ ताहे असंखगुणियं मोहादु तिघादिपयडिठिदिसंतं। तत्तो असंखगुणियं णामदुगं साहियं तु वेयणियं ।। लब्धि. ४४७.

४ सत्तण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे दु मोहठिदिसंतं। संखेज्जगुणविहीणं सेसाणमसंखगुणहीणं ।। लब्धि. ४४८.

५ सत्तण्हं पढमट्ठिदिखंडे पुण्णे ति घादिठिदिबंधो। संखेज्जगुणविहीणं अघादितियाणं असंखगुणहीणं ।। लब्धि. ४४९.

६ ठिदिबंधपुधत्तगदे संखेज्जदिमं गतं तदद्धाए। एत्थ अघादितियाणं ठिदिबन्धो संखवस्सं तु ।। लब्धि. ४५०.

संखेज्जेसु भागेसु गदेसु णाणावरण-दंसणावरण-अंतराइयाणं संखेज्जवस्सट्ठिदिगं संतकम्मं जादं[1]। तत्तो पाएण घादिकम्माणं ट्ठिदिबंधे ट्ठिदिखंडए च पुण्णे पुण्णे ट्ठिदिबंध-ट्ठिदि-संतकम्माणि संखेज्जगुणहीणाणि। णामा गोद-वेदणीयाणं पुण्णे ट्ठिदिखंडए असंखेज्ज-गुणहीणं ट्ठिदिसंतकम्मं। एदेसिं चेव ट्ठिदिबंधे पुण्णे अण्णो ट्ठिदिबंधो संखेज्जगुणहीणो। एदेण कमेण ताव जाव सत्तण्हं णोकसायाणं संकामगस्स चरिमट्ठिदिबंधो त्ति अणुभाग-बंधो अणुभागुदओ च समयं पडि असुहाणं कम्माणमणंतगुणहीणो[2]। वुत्तं च—

उदओ च अणंतगुणो संपहिबंधेण होदि अणुभागे।
से काले उदयादो संपदिबंधो अणंतगुणो[3] ॥ २७ ॥
बंधेण होदि उदओ अहिओ उदएण संकमो अहिओ।
गुणसेडि अणंतगुणा बोद्धव्वा होदि अणुभागे[4] ॥ २८ ॥

कालमेंसे संख्यात बहुभागोंके चले जानेपर ज्ञानावरण, दर्शनावरण व अन्तराय इनका संख्यात वर्षमात्र स्थितिवाला सत्व हो जाता है। यहांसे लेकर घातिया कर्मोंके प्रत्येक स्थितिबन्ध और स्थितिकांडकके पूर्ण होनेपर स्थितिबन्ध एवं स्थितिसत्व संख्यातगुणे हीन होते जाते हैं। स्थितिकांडकके पूर्ण होनेपर नाम, गोत्र व वेदनीय, इनका स्थिति-सत्व असंख्यातगुणा हीन होता जाता है। इनके ही स्थितिबन्धके पूर्ण होनेपर अन्य स्थितिबन्ध संख्यातगुणा हीन होता जाता है। इस क्रमसे तब तक जाते हैं जब तक कि सात नोकषायोंके संक्रामकका अन्तिम स्थितिबन्ध होता है। अशुभ कर्मोंका अनुभागबन्ध व अनुभागोदय प्रत्येक समयमें अनन्तगुणा हीन होता है। कहा भी है—

अनुभागविषयक साम्प्रतिक बन्धसे साम्प्रतिक अनुभागोदय अनन्तगुणा होता है। इससे अनन्तर कालमें होनेवाले उदयसे साम्प्रतिक बन्ध अनन्तगुणा होता था ॥ २७ ॥

बन्धसे अधिक उदय और उदयसे अधिक संक्रमण होता है। इस प्रकार अनु-भागके विषयमें अनन्तगुणित गुणश्रेणी जानना चाहिये ॥ २८ ॥

---

१ ठिदिखंडपुधत्तगदे संखाभागा गदा तदद्धाए घादितियाणं तत्थ य ठिदिसंतं संखवस्सं तु ॥ लब्धि. ४५१.

२ पडिसमयं असुहाणं रसबंधुदया अणंतगुणहीणा। बंधो वि य उदयादो तदणंतरसमय उदयोथ ॥ लब्धि. ४५१.

३ उदओ च अणंतगुणो एवं भणिदे वट्टमाणसमयपबद्धादो वट्टमाणसमये उदओ अणंतगुणो त्ति दट्ठव्वो। किं कारणं ? चिराणसंतसरूवत्तादो। ××× से काले उदयादो एवं भणिदे णिरुद्धसमयादो तदणंतरोवरिमसमए जो उदओ अणुभागविसओ, तत्तो एसो संपहिसमयपबद्धो अणंतगुणो त्ति दट्ठव्वो। कुदो एवं चे समए समए अणुभागो-दयस्स विसोहिपाहम्मेणाणंतगुणहाणीए ओवट्टिज्जमाणस्स तहाभावोववत्तीए। जयध. अ. प. १०९३.

४ लब्धि. ४५३; जयध. अ. प. १०९२.

गुणसेडि अणंतगुणेणूणाए वेदगो दु अणुभागे ।
गणणादियंतसेडी पदेसअग्गेण बोद्धव्वा[1] ॥ २९ ॥

बंधोदएहि णियमा अणुभागो होदि णंतगुणहीणो ।
से काले से काले भज्जो पुण संकमो होदि[2] ॥ ३० ॥

सत्तण्हं णोकसायाणं संकामगस्स चरिमो ट्ठिदिबंधो पुरिसवेदस्स अट्ठ वस्साणि, संजलणाणं सोलस वस्साणि, सेसाणं कम्माणं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि[3] । ट्ठिदिसंतकम्मं पुण घादिकम्माणं चदुण्हं पि संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, णामा-गोद-वेदणीयाणमसंखेज्जाणि वस्साणि[4] । अंतरादो पढमसमयकदादो पाए छण्णोकसाए कोहे संछुहदि, ण

(अप्रशस्त प्रकृतियोंके) अनुभागका वेदक अनन्तगुणित हीन गुणश्रेणीरूपसे होता है। तथा प्रदेशाग्रकी अपेक्षा गणनातिक्रान्त अर्थात् असंख्यातगुणी श्रेणीरूपसे वेदक होता हैं, ऐसा जानना चाहिये ॥ २९ ॥

नियमतः बन्ध व उदयसे अनुभाग अर्थात् अनुभागबन्ध और अनुभागउदय उत्तरोत्तर अनन्तरकालमें अनन्तगुणे हीन हैं। परन्तु अनुभागसंक्रम भाज्य है अर्थात् उक्त हीनताके नियमसे रहित हैं। ॥ ३० ॥

सात नोकषायोंके संक्रामकका अन्तिम स्थितिबन्ध पुरुषवेदका आठ वर्ष, संज्वलनचतुष्कका सोलह वर्ष, और शेष कर्मोंका संख्यात हजार वर्षप्रमाण होता हैं। परन्तु स्थितिसत्व चारों घातिया कर्मोंका संख्यात हजार वर्ष तथा नाम, गोत्र व वेदनीय, इनका असंख्यात वर्षप्रमाण रहता है। प्रथम समयकृत अन्तरसे, अर्थात् अन्तरकरण कर चुकनेके पश्चात् अनन्तर समयसे लेकर छह नोकषायोंको संज्वलनक्रोधमें स्थापित करता है, अन्य

---

१ लब्धि. ४५४ तदो समये समये अणंतगुणहीणमणंतगुणहीणमपसत्थकम्माणमणुभागमेसो वेदयदि त्ति गाहापुव्वद्धे समुदयत्थो । × × × गणणादियंतसेढी एवं भणिदे असंखेज्जगुणाए सेढीए पदेसग्गमेसो समयं पडिवेदेदि त्ति भणिदं होई । जयध. अ. प. १०९३.

२ लब्धि. ४५५. बंधोदएहिं एवं भणिदे बंधोदयेहि तात्र णियमा णिच्छएण अणुभागो सेकालभाविओ अणंतगुणहीणो होदि त्ति पदसंबंधो । संपहियकालविसयादो अणुभागबंधादो से काले विसओ अणुभागबंधो विसोहिपाहम्मेणाणंतगुणहीणो होदि। एवमुदओ वि दट्ठव्वो त्ति भणिदं होदि । भज्जो पुण संकमो होई एवं भणिदे अणुभागसंकमो पुण अणंतगुणहीणत्ते भयणिज्जो होई । किं कारणं ? जाव अणुभागखंडयं ण पादेदि ताव अवट्ठिदो चेव संकमो भवदि, अणुभागखंडए पुण पदिदे अणुभागसंकमो अणंतगुणहीणो जायदि त्ति तत्थ परिप्फुडमेव भयणिज्जत्तदंसणादो । जयधा. अ. प. १०९४.

३ सत्तण्हं संकामगचरिमे पुरिसस्स बंधमडवस्सं। सोलस संजलणाणं संखसहस्साणि सेसाणं ॥ लब्धि. ४५७.

४ ठिदीसंतं घादिणं संखसहस्साणि होंति वस्साणं । होंति अघातिदियाणं वस्साणमसंखमेत्ताणि ॥ लब्धि. ४५८.

अण्णम्हि कम्हि[1] वि। पुरिसवेदस्स पढमट्ठिदीए दोआवलीयासु सेसासु आगाल-पडिआगालो वोच्छिण्णो। पढमट्ठिदीदो चेव उदीरणा[2]। समयाहियाए आवलियाए सेसाए जहण्णिया ट्ठिदिउदीरणा। तदो चरिमसमयपुरिसवेदओ जादो। ताधे छण्णोकसाया संछुद्धा। पुरिसवेदस्स जाओ दोआवलियाओ समऊणाओ एत्तियसमयपबद्धा विदियट्ठिदीए अत्थि, उदयट्ठिदी च अत्थि,[3] सेसं पुरिसवेदस्स संतकम्मं सव्वं संछुद्धं।

से काले अस्सकण्णकरणं पव्वत्तिहिदि। अस्सकण्णकरणेत्ति वा आदोलकरणेत्ति वा ओवट्टण-उव्वट्टणकरणेत्ति वा तिण्णि णामाणि अस्सकण्णकरणस्स[4]। छसु कम्मेसु

किसीमें भी स्थापित नहीं करता। पुरुषवेदकी प्रथमस्थितिमें दो आवलीयोंके शेष रहनेपर आगाल व प्रत्यागालकी व्युच्छित्ति हो जाती है। प्रथमस्थितिसे ही उदीरणा होती है। एक समय अधिक आवलीके शेष रहनेपर जघन्य स्थितिकी उदीरणा होती है। तत्पश्चात् अन्तिमसमयवर्ती पुरुषवेदक होता है। उस समय छह नोकषायें संक्रमको प्राप्त हो चुकती हैं। पुरुषवेदकी जो एक समय कम दो आवलियां हैं उतनेमात्र नवक समयप्रबद्ध द्वितीय स्थितिमें हैं। और उदयस्थिति भी है; शेष सब पुरुषवेदका सत्व संक्रमणको प्राप्त हो चुकता है।

तदनन्तर समयमें अश्वकर्णकरण प्रवृत्त होता है। अश्वकर्णकरण अथवा आदोलकरण अथवा अपवर्तनोद्वर्तनकरण, ये अश्वकरणके तीन नाम हैं। छह कर्मोंके संक्रमको

---

१ अंतरकदपढमादो कोहे छण्णोकसाययं छुहदि। पुरिसस्स चरिमसमए पुरिस वि एणेण सव्वयं छुहदि॥ लब्धि. ४६०.

२ पुरिसस्स य पढमट्ठिदि आवलिदोसुवरिदासु आगाला। पडिआगाला छिण्णा पडिआवलियादुदीरणदा॥ लब्धि. ४५९.

३ समऊणदोण्णिआवलिएमाणसमयप्पबद्धणवबंधो। विदिये ठिदिये अत्थि हु पुरिसस्सुदयावली च तदा॥ लब्धि. ४६१.

४ से काले ओवट्टणिउव्वट्टण अस्सकण्ण आदोलं। करणं तियसण्णगयं संजलणरसेसु वट्टिहिदि॥ ४६२. अश्वस्य कर्णः अश्वकर्णः, अश्वकर्णवत्करणमश्वकर्णकरणम्। यथाश्वकर्णः अग्रात्प्रभृत्यामूलात् क्रमेण हीयमानस्वरूपो दृश्यते तथेदमपि करणं क्रोधसंज्वलनात् प्रभृत्यालोभसंज्वलनाद्यथाक्रममनन्तगुणहीनानुभागस्पर्द्धकसंस्थानव्यवस्थाकरणमश्वकर्णकरणमिति लक्ष्यते। संपहि आदोलनकरणसण्णाए अत्थो वुच्छदे-- आदोलं णाम हिंदोलमादोलमिवकरणमादोलकरणं। यथा हिंदोलत्थंभस्स वरत्ताए च अंतराले तिकोणं होदूण कण्णायारेण दीसइ एवमेत्थवि कोहादिसंजलणाणमणुभागसंणिवेसो कमेण हीयमाणो दीसइ त्ति एदेण कारणेण अस्सकण्णकरणस्स आदोलकरणसण्णा जादा। एवमोवट्टणमुव्वट्टणकरणेत्ति एसो वि पज्जायसद्दो अणुगयट्ठो दट्ठव्वो, कोहादिसंजलणाणमणुभागविण्णासस्स हाणिवड्ढिसरूवेणावट्ठाणं पेक्खियूण तत्थ ओवट्टणुव्वट्टणसण्णाए पुव्वाइरिएहिं पयट्टिदत्तादो। जयध. अ. प. ११०४-११०५.

संछुद्धेसु से काले पढमसमयअवेदो होदि। ताधे चेव पढमसमयअस्सकण्णकरणकारओ च। ताधे ट्ठिदिसंतकम्मं संजलणाणं संखेज्जाणि वस्ससहस्साणि, ठिदिबंधो सोलस वस्साणि अंतोमुहुत्तूणाणि[1]। अणुभागसंतकम्मं आगाइदेण[2] सह माणे थोवं, कोधे विसेसाहियं, मायाए विसेसाहियं, लोभे विसेसाहियं बंधो वि एरिसो चेव[3]। अणुभागखंडगो पुण जो आगाइदो तस्स कोधे फद्दयाणि थोवाणि, माणे फद्दयाणि विसेसाहियाणि[4] मायाए फद्दयाणि विसेसाहियाणि, लोभे फद्दयाणि विसेसाहियाणि। आगाइदसेसाणि पुण फद्दयाणि[5] लोभे थोवाणि, मायाए अणंतगुणाणि, माणे अणंतगुणाणि, कोधे अणंतगुणाणि[6] एसा परूवणा पढमसमयअस्सकण्णकरणकारयस्स।

तम्हि चेव पढमसमए चदुण्हं संजलणाणमपुव्वफद्दयाणि करेदि[7]। तेसिं परूवणं

प्राप्त होनेपर अनन्तर कालमें प्रथमसमयवर्ती अवेदी होता है। उसी समयमे ही प्रथमसमयवर्ती अश्वकर्णकरणकारक भी होता हैं। उस समयमें संज्वलनचतुष्कका स्थितिसत्व संख्यात हजार वर्षप्रमाण और स्थितिबन्ध अन्तर्मुहूर्त कम सोलह वर्षमात्र होता है। अश्वकर्णकरणकी प्रारम्भ करनेवालेने जिस अनुभागकांडकको ग्रहण किया हैं उसके साथ तत्कालभावी अनुभागसत्वका यह अल्पबहुत्व किया जाता है—अनुभागसत्व मानमें स्तोक, क्रोधमें विशेष अधिक, मायामें विशेष अधिक और लोभमें विशेष अधिक हैं। अनुभागबन्ध भी इसी अल्पबहुत्वविधिसे प्रवर्तमान है। परन्तु जो अनुभागकांडक ग्रहण किया है उसके क्रोधमें स्पर्द्धक स्तोक हैं। मानमें स्पर्द्धक विशेष अधिक हैं। मायामें स्पर्द्धक विशेष अधिक हैं। लोभमें स्पर्द्धक विशेष अधिक हैं। परन्तु ग्रहण करनेसे अर्थात् घात करनेसे शेष रहे अनुभागके स्पर्द्धक लोभमें स्तोक, मायामें अनन्तगुणित, मानमें अनन्तगुणित और क्रोधमें अनन्तगुणित हैं। यह प्रथमसमयवर्ती अश्वकर्णकरणकारककी प्ररूपणा है

उसी प्रथम समयमें चार संज्वलनकषायोंके अपूर्वस्पर्द्धकोंको करता है। उनकी

---

१ ताहे संजलणाणं ठिदिसंतं संखवस्सयसहस्सं। अंतोमुहुत्तहीणो सोलस वस्साणि ठिदिबंधो॥ लब्धि. ४६३.

२ एत्थ सह आगाइदेणेत्ति वुत्ते अस्सकण्णकरणमाढवेंतेण जमणुभागखंडयमागाइदं तेण सह तक्कालभावियस्स अणुभागसंतकम्मस्स एदमप्पाबहुअं कीरदि त्ति भणिदं होदि॥ जयध. अ. प. ११०५.

३ रससंत आगहिदं खंडेण समं माणगे कोहे। मायाए लोभे वि य अहियकमा होंति बंधे वि॥ लब्धि. ४६४.   ४ थोवाणि, विसेसाहियाणि ता. १   ५ सेसाणि फद्दयाणि मु.

६ रसखंडफड्ढयाओ कोहादीया हवंति अहियकमा। अवसेसफड्ढयाओ लोहादि अणंतगुणियकमा॥ लब्धि ४६५.

७ ताहे संजलणाणं देसावरफड्ढयस्स हेट्ठादो। णंतगुणूणमपुव्वं फड्ढयमिह कुणदि अणंतं॥ लब्धि. ४६६. काणि अपुव्वफद्दयाणि णाम? संसारावत्थाए पुव्वमलद्धप्पसरूवाणि खवगसेढी (ए?) चेव अस्सकण्णकरणद्धाए समुवलब्भमाणसरूवाणि पुव्वफद्दएहिंतो अणंतगुणहाणीए ओवट्टिज्जमाणसहावाणि जाणि फद्दयाणि ताणि अपुव्वफद्दयाणि त्ति

वत्तइस्सामो। तं जहा-सव्वस्स अक्खवगस्स सव्वकम्माणं देसघादिफद्दयाणमादिवग्गणा तुल्ला। सव्वघादीणं पि मिच्छत्तं मोत्तूण सेसाणं कम्माणं सव्वघादिआदिवग्गणा तुल्ला। एत्थ चदुण्हं संजलणाणं अपुव्वफद्दयाणि करेदि। ताणि कधं करेदि ? लोभस्स ताव लोभसंजलणस्स पुव्वफद्दएहिंतो पदेसग्गस्स असंखेज्जदिभागं घेत्तूण पढमस्स देसघादिफद्दयस्स हेट्ठा अणंतभागे अण्णाणि अपुव्वफद्दयाणि णिव्वत्तयदि। ताणि पगणणादो अणंताणि, पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरफद्दयाणमसंखेज्जदिभागो। एत्तियाणि ताणि अपुव्वफद्दयाणि[2]।

तत्थ पढमस्स फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं थोवं। विदियस्स फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गमणंतभागुत्तरं। विदियादो तदियं दुभागुत्तरं। तदियादो चउत्थं तिभागुत्तरं। एवं कमेण संखेज्जदिभागुत्तरं गंतूण पुणो असंखेज्जादि-

---

प्ररूपणाको कहते हैं। वह इस प्रकार है---सब अक्षपक जीवोंके समस्त कर्मोंके देशघाती स्पर्द्धकोंकी प्रथम वर्गणा समान हैं। सर्वघातियोंमें मिथ्यात्वको छोडकर सर्वघाती कर्मोंकी प्रथम वर्गणा समान है। यहां चार संज्वलनकषायोंके अपूर्वस्पर्द्धकोंको करता है।

शंका---उन अपूर्वस्पर्द्धकोंको किस प्रकार करता है ?

समाधान---प्रथमतः लोभके अपूर्व स्पर्द्धकोंके विधानको कहते हैं---संज्वलनलोभके पूर्वस्पर्द्धकोंसे प्रदेशाग्रके असंख्यातवें भागको ग्रहण कर प्रथम देशघाती स्पर्द्धकके नीचे अनन्तगुणहानिरूपसे अपवर्तित कर उसके अनन्तवें भागमें अन्य अपूर्वस्पर्द्धकोंकी रचना करता है। वे अपूर्वस्पर्द्धक गणनासे अनन्त होते हुए भी प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरके भीतर जितने स्पर्द्धक हैं उनके असंख्यातवें भागमात्र हैं। वे अपूर्वस्पर्द्धक इतने मात्र हैं।

प्रथम समयमें निर्वर्तित अपूर्वस्पर्द्धकोंमेंसे प्रथम स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेद स्तोक हैं। द्वितीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदोंका समूह अनन्त बहुभागसे अधिक है। द्वितीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणासे तृतीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणामें द्वितीय भाग अर्थात् आधेसे अधिक है। तृतीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणासे चतुर्थ स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणामें त्रिभागसे अधिक है। इस प्रकार क्रमसे संख्यातभागोत्तरवृद्धिसे जाकर पुनः असंख्यातभागसे अधिक होता है। पुनः असंख्यात-

---

भण्णंते। जयधा अ. प. ११०६. वर्धमानं मतं पूर्वं हीयमानमपूर्वकम्। स्पर्धकं द्विविधं ज्ञेयं स्पर्धकक्रमकोविदैः ।। पंचसंग्रह-अमितगतिकृत, १, ४६.

२ गणनादेयपदेसगगुणहाणिट्ठाणफड्ढयाणँ तु। होदि असंखेज्जदिमं अवरादु वरं अणंतगुणं ।। लब्धि.४६७.

भागुत्तरं होदि । पुणो असंखेज्जदिभागुत्तरं गंतूण पुणो अणंतभागुत्तरं[1] होदि । एवमणंत-राणंतरेण गंतूण चरिमस्स वि फद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं विसेसा-हियमणंतभागेण ।

जाणि पढमसमए अपुव्वफद्दयाणि णिव्वत्तिदाणि तत्थ पढमस्स फद्दयस्स आदि-वग्गणा थोवा । चरिमस्स अपुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणा अणंतगुणा । पुव्वफद्दयस्स वि आदिवग्गणा[2] अणंतगुणा । जहा लोभस्स अपुव्वफद्दयाणि परूविदाणि पढमसमए, तधा मायाए माणस्स कोधस्स य परूवेदव्वाणि ।

पढमसमए जाणि अपुव्वफद्दयाणि णिव्वत्तिदाणि तत्थ कोधस्स थोवाणि ।

भागोत्तरवृद्धिसे जाकर पुनः अनन्तवें भागसे अधिक होता है । इस प्रकार अनन्तर अनन्तररूपसे जाकर (द्विचरम स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंकी अपेक्षा) अन्तिम स्पर्द्धककी भी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदोंका समूह अनन्त भागसे विशेष अधिक है ।

विशेषार्थ—पूर्वोक्त कथनका अभिप्राय इस प्रकार है—द्वितीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणासे तृतीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणा कुछ कम द्वितीय भागसे अधिक है, तृतीय स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणासे चतुर्थ स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणा कुछ कम तृतीय भागसे अधिक है, इस प्रकार जब तक जघन्य परीतासंख्यातप्रमाण स्पर्द्धकोंकी प्रथम स्पर्द्धकवर्गणा अपने अनन्तर नीचेके स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणासे उत्कृष्ट संख्यातवें भागसे अधिक होकर संख्यातभागवृद्धिके अंतको न प्राप्त हो जावे तब तक इसी प्रकार चतुर्थ-पंचम भागाधिक-क्रमसे ले जाना चाहिये । इससे आगे जब तक आदिसे लेकर जघन्य परीतानन्तप्रमाण स्पर्द्धकोंमें अन्तिम स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणा अपने अनन्तर नीचेके स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणासे उत्कृष्ट असंख्यातासंख्यातवें भागसे अधिक होकर असंख्यातभागवृद्धिके अन्तको न प्राप्त हो जावे तब तक असंख्यातभागोत्तरवृद्धिका क्रम चालू रहता है । इसके आगे अन्तिम अपूर्वस्पर्द्धक तक अनन्तभागवृद्धिका क्रम जानना चाहिये ।

प्रथम समयमें जो अपूर्वस्पर्द्धक निर्वर्तित हैं उनमें प्रथम स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणा स्तोक और अन्तिम अपूर्वस्पर्द्धकी प्रथम वर्गणा अनन्तगुणी हैं । पूर्वस्पर्द्धककी भी आदिम वर्गणा अनन्तगुणी है । प्रथम समयमें जिस प्रकार लोभके अपूर्वस्पर्द्धकोंका प्ररूपण किया है उसी प्रकार माया, मान और क्रोधके भी अपूर्वस्पर्द्धकोंका प्ररूपण करना चाहिये ।

प्रथम समयमें जो अपूर्वस्पर्द्धक निर्वर्तित हैं उनमें क्रोधके अपूर्वस्पर्द्धक स्तोक,

---

१ गंतूणपुण्णे असंखेज्जदिभागुत्तरं गंतूण असंखेज्जभागुत्तरं होदि । पुणो अणंतभागुत्तरं होदि ता. १,२ ।

२ पुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणा ता. १

माणस्स अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। मायाए अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। लोभस्स अपुव्वफद्दयाणि विसेसाहियाणि। विसेसो अणंतभागो[1]। तेसिं चेव पढमसमए णिव्वत्तिदाणमपुव्वफद्दयाणं लोभस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं थोवं। मायाए आदिवग्गणाए अविभागपलिच्छेदग्गं विसेसाहियं। माणस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं विसेसाहियं। कोधस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं विसेसाहियं। चदुण्हं पि कसायाणं जाणि अपुव्वफद्दयाणि तत्थ चरिमस्स अपुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणाए अविभागपडिच्छेदग्गं चदुण्हं पि कसायाणं तुल्लमणंतगुणं[2]। कोहादिचदुण्हं संजलणाणं जाओ आदिवग्गणाओ, तासिं परिवाडीए जहाकमेणेसा संदिट्ठी— २१०।१६८।१४०।१२०। कोहादीणं जहाकमेण अपुव्वफद्दयसलागाओ एदाओ— १२।१५।१८।२१।

मानके अपूर्वस्पर्द्धक विशेष अधिक, मायाके अपूर्वस्पर्द्धक विशेष अधिक, और लोभके अपूर्वस्पर्द्धक विशेष अधिक हैं। अधिकताका प्रमाण यहां अनन्तवां भाग है। प्रथम समयमें निर्वर्तित उन्हीं अपूर्वस्पर्द्धकोंमें लोभकी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदसमूह स्तोक है। मायाकी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदसमूह विशेष अधिक है। (मानकी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदसमूह विशेष अधिक है।) क्रोधकी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदसमूह विशेष अधिक है। चारों ही कषायोंके जो अपूर्वस्पर्द्धक हैं उनमें अन्तिम अपूर्वस्पर्द्धककी प्रथम वर्गणामें अविभागप्रतिच्छेदोंका समूह चारों ही कषायोंके तुल्य अनन्तगुणा है। क्रोधादिरूप चारों संज्वलनोंकी जो प्रथम वर्गणायें हैं उनकी परिपाटीमें यथाक्रमसे यह संदृष्टि है—— २१०। १६८। १४०। १२०। क्रोधादिकोंकी यथाक्रमसे अपूर्वस्पर्द्धकशलाकायें ये हैं—— १२। १५। १८। २१।

विशेषार्थ—अपूर्वस्पर्द्धकोंमें प्रथम स्पर्द्धककी प्रथम वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंको स्पर्द्धकशलाकासे गुणा कर देनेपर अन्तिम स्पर्द्धककी आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेदोंका प्रमाण आता है, जो सब कषायोंका तुल्य होता है तथा आदिम वर्गणाकी अपेक्षा अनन्तगुणा है।

	क्रोध	मान	माया	लोभ
आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद	२१०	१६८	१४०	१२०
अपूर्वस्पर्धक शलाका	×१२	×१५	×१८	×२१
अन्तिम स्पर्द्धककी आदि वर्गणाके अविभागप्रतिच्छेद ...	२५२०	२५२०	२५२०	२५२०

---

१ पुव्वाण फड्डयाणं छेत्तूण असंखभागदव्वं तु। कोहादीणमपुव्वं फड्डयमिह कुणदि अहियकमा॥ लब्धि. ४६८.

२ कोहादीणमपुव्वं जेट्ठं सरिसं तु अवरमसरित्थं। लोहादिआदिवग्गणअविभागा होंति अहियकमा॥ लब्धि. ४७१.

पढमसमयअस्सकण्णकरणकारयस्स जं पदेसग्गमोकड्डिज्जदि तेण[1] कम्मस्स अवहारकालो थोवो। अपुव्वफद्दएहि पदेसगुणहाणिट्ठाणंतरस्स अवहारकालो असंखेज्जगुणो। पलिदोवमवग्गमूलमसंखेज्जगुणं[2]। पढमसमए णिव्वत्तिज्जमाणएसु अपुव्वफद्दएसु पुव्वफद्दएहिंतो ओकड्डिदूण पदेसग्गमपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए बहुगं देदि। विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं देदि एवमणंतराणंतरेण गंतूण चरिमाए अपुव्वफद्दयवग्गणाए विसेसहीणं देदि। तदो चरिमादो अपुव्वफद्दयवग्गणादो पढमस्स पुव्वफद्दयस्स आदिवग्गणाए असंखेज्जगुणहीणं देदि। तदो विदियाए पुव्वफद्दयवग्गणाए विसेसहीणं देदि। सेसासु सव्वासु पुव्वफद्दयवग्गणासु विसेसहीणं देदि[3]। तम्हि चेव पढमसमए जं दिस्सदि पदेसग्गं तमपुव्वफद्दयाणं पढमए वग्गणाए बहुअं, पुव्वफद्दयआदिवग्गणाए विसेसहीणं। जहा लोभस्स मायाए माणस्स कोधस्स च।

उदयपरूवणा। तं जहा– पढमसमए चेव अपुव्वफद्दयाणि उदिण्णाणि च अणु-

---

प्रथमसमयवर्ती अश्वकर्णकरणका करनेवाला जिस प्रदेशाग्रको अपकर्षित करता है उसके प्रमाणसे कर्मका अवहारकाल स्तोक है। अपूर्वस्पर्द्धकोंसे प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरका अवहारकाल असंख्यातगुणा है। पल्योपमका वर्गमूल असंख्यातगुणा हैं। (अर्थात् अपकर्षण-उत्कर्षणभागहारसे असंख्यातगुणे और पल्योपमके प्रथम वर्गमूलसे असंख्यात गुणे हीन पल्योपमके असंख्यातवें भागसे एक प्रदेशगुणहानिस्थानान्तरके स्पर्द्धकोंके अपवर्तित करनेपर जो भाग लब्ध हो उतनेमात्र संज्वलनक्रोधादिकोंके स्पर्द्धक होते हैं।) प्रथम समयमें निर्वर्तित किये जानेवाले अपूर्वस्पर्द्धकोंमे पूर्वस्पर्द्धकोंसे अपकर्षण करके प्रदेशाग्रको अपूर्वस्पर्द्धकोंकी प्रथम वर्गणामें देता हैं। द्वितीय वर्गणामें विशेष हीन देता है। इस प्रकार अनन्तर-अनन्तररूपसे जाकर अन्तिम अपूर्वस्पर्द्धकवर्गणामें विशेष हीन देता है। उस अन्तिम अपूर्वस्पर्द्धकवर्गणासे प्रथम पूर्वस्पर्द्धककी प्रथम वर्गणामें असंख्यातगुणा हीन देता है। उससे द्वितीय पूर्वस्पर्द्धकवर्गणामें विशेष हीन देता है। शेष सब पूर्वस्पर्द्धकवर्गणाओंमें विशेष हीन देता है। उसी प्रथम समयमें जो प्रदेशाग्र दिखता है वह अपूर्वस्पर्द्धकोंकी प्रथम वर्गणामें बहुत और पूर्वस्पर्द्धकोंकी प्रथम वर्गणामें विशेष हीन है। पूर्व व अपूर्व स्पर्द्धकोंमें दिये जानेवाले प्रदेशाग्रकी यह श्रेणिप्ररूपणा जैसे लोभकी की गई है वैसे ही माया, मान, और क्रोधकी भी जानना चाहिये।

उसी अश्वकर्णकरणकालके प्रथम समयम चार संज्वलनकषायोंके अनुभागोदयकी प्ररूपणा की जाती है। वह इस प्रकार है– प्रथम समयमें ही अपूर्वस्पर्द्धक उदीर्ण

---

१ 'मोकड्डिज तेण' ता. १

२ ताहे दव्ववहारो पदेसगुणहाणिफड्डयवहारो। पल्लस्स पढममूलं असंखगुणियकम्मा होंति।। लब्धि. ४७५.

३ उक्कट्टिदं हु देदि अपुव्वादिमग्गणाउ हीणकमं। पुव्वादिवग्गणाए असंखगुणहीणयं तु हीणकमा ।। लब्धि. ४७०

दिण्णाणि च । पुव्वफद्दयाणं पि आदीदो अणंतभागो उदिण्णो च अणुदिण्णो च, उवरिमअणंता भागा अणुदिण्णा । बंधेण णिव्वत्तिज्जंति अपुव्वफद्दयं पढममादिं[1] कादूण जाव लदासमाणफद्दयाणणंतिमभागो त्ति[2] । एसा सव्वा परूवणा पढमसमयअस्सकण्णकरणकारयस्स । एत्तो विदियसमए तं चेव ट्ठिदिखंडयं, तं चेव अणुभागखंडयं, सो चेव ट्ठिदिबंधो । अणुभागबंधो अणंतगुणहीणो । गुणसेडी असंखेज्जगुणा । अपुव्वफद्दयाणि जाणि पढमसमए णिव्वत्तिदाणि विदियसमए ताणि च णिव्वत्तयदि अण्णाणि च अपुव्वफद्दयाणि तदो असंखेज्जगुणहीणाणि ।

विदियसमए अपुव्वफद्दएसु दिज्जमाणस्स पदेसग्गस्स सेडिपरूवणं वत्तइस्सामो । तं जहा– विदियसमए अपुव्वफद्दयाणमादिवग्गणाए पदेसग्गं बहुअं दिज्जदि, विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं दिज्जदि । एवमणंतरोवणिधाए विसेसहीणं दिज्जदि ताव जाव जाणि विदियसमए अपुव्वाणि अपुव्वफद्दयाणि कदाणि । तेसिं चरिमादो वग्गणादो पढमसमए[3] जाणि अपुव्वाणि फद्दयाणि कदाणि तेसिमादिवग्गणाए दिज्जदि पदेसग्गमसंखेज्जगुणहीणं । तदो विदियाए वग्गणाए विसेसहीणं दिज्जदि । तत्तो पाए अणंतरो-

---

भी हैं और अनुदीर्ण भी हैं । पूर्वस्पर्द्धकोंका भी आदिसे अनन्तवां भाग उदीर्ण और अनुदीर्ण, तथा उपरिम अनन्त बहुभाग अनुदीर्ण हैं । अनुभागबन्धसे प्रथम अपूर्वस्पर्द्धकको आदि करके लतासमान स्पर्द्धकोंके अनन्तवें भाग तक स्पर्द्धक रचे जाते हैं । यह सब प्ररूपणा प्रथम समय अश्वकर्णकरणकारककी है । यहांसे द्वितीय समयमें वही स्थितिकांडक, वही अनुभागकांडक और वही स्थितिबन्ध भी है । अनुभागबन्ध अनन्तगुणा हीन है । गुणश्रेणी असंख्यातगुणी है । प्रथम समयमें जो अपूर्वस्पर्द्धक निर्वर्तित हैं, द्वितीय समयमें उन्हें भी रचता है और उनसे असंख्यातगुणे हीन अन्य भी अपूर्वस्पर्द्धकोंको रचता है ।

द्वितीय समयमें अपूर्व स्पर्द्धकोंमें दिये जानेवाले प्रदेशाग्रके श्रेणीप्ररूपणको कहते हैं । वह इस प्रकार है—द्वितीय समयमें अपूर्वस्पर्द्धकोंकी आदि वर्गणामें बहुत प्रदेशाग्रको देता है । द्वितीय वर्गणामें विशेष हीन प्रदेशाग्रको देता है । इस प्रकार अनन्तर उपनिधाके क्रमसे विशेष हीन प्रदेशाग्र तब तक दिया जाता हैं जब तक कि जो द्वितीय समयमें अपूर्व अपूर्वस्पर्द्धक किये हैं । फिर उनकी अन्तिम वर्गणासे प्रथम समयमें जो अपूर्वस्पर्द्धक किये हैं उनको प्रथम वर्गणामें असंख्यातगुणे हीन प्रदेशाग्रको देता है । उससे द्वितीय वर्गणामें विशेष हीन प्रदेशाग्रको

---

१ '–फद्दयपढमादि' ता. १ ।

२ ताहे अपुव्वफड्डयपुव्वस्सादीदणंतिममुदेदि । बंधो हु लदाणंतिमभागो त्ति अपुव्वफड्डयदो । लब्धि. ४७६.

३ वग्गणादो त्ति । तदो चरिमादो वग्गणादो पढमसमए मु. ।